Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-3* *Issue-4* *April 2026*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

वृद्ध महिलाओं के जीवन में पीढ़ीगत संबंध और समायोजन का अध्ययन

कल्पना पटेल

समाजशास्त्र विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

Article Info: *(Recieved- 28/01/2026, Accept- 20/02/2026, Published- 02/04/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i4001

सार

वर्तमान समय में वृद्ध महिलाओं से संबंधित समस्याएं विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं, जिनमें परिवारिक सामायोजन का अभाव एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है। वृद्धावस्था में प्रवेश करते ही महिलाओं के सामने अनेक चुनौतियाँ उभरने लगती हैं, जिनमें स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, आर्थिक निर्भरता तथा भावनात्मक उपेक्षा प्रमुख हैं। इन परिस्थितियों में परिवार के अन्य सदस्यों विशेषकर पुत्र, बहु तथा नाती–पोतों के साथ समन्वय स्थापित करना उनके लिए कठिन हो जाता है। नगरीय क्षेत्रों में यह समस्या और अधिक स्पष्ट रूप से देखी जाती है। जब तक वृद्ध महिलाएँ शारीरिक रूप से सक्षम रहती हैं और घरेलू कार्यों में योगदान देती हैं, तब तक उन्हें परिवार में एक उपयोगी सदस्य के रूप में देखा जाता है। किन्तु जैसे–जैसे उनकी कार्यक्षमता में कमी आती है और वे शारीरिक रूप से कमजोर होने लगती हैं, परिवार के सदस्यों का व्यवहार उनके प्रति बदलने लगता है। कई बार उन्हें उपेक्षा, अनदेखी और अस्वीकार का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति तब और भी गंभीर हो जाती है जब वृद्ध महिलाएँ किसी बीमारी से ग्रस्त हो जाती हैं। ऐसी अवस्था में उन्हें न केवल शारीरिक कष्ट सहरना पड़ता है, बल्कि भावनात्मक रूप से भी वे स्वयं को अकेला और असुरक्षित महसूस करती हैं। कुछ मामलों में परिवार के सदस्य, विशेषकर बहुएँ, उनके प्रति उदासीन या तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करती हैं तथा बच्चों को भी उनसे दूरी बनाए रखने के लिए प्रेरित करती हैं। अतः स्पष्ट है कि वृद्ध महिलाओं के संदर्भ में परिवारिक सामजस्य की समस्या एक गंभीर सामाजिक चिन्ता का विषय है, जिसके समाधान हेतु संवेदशीलता, परिवारिक मूल्यों के पुनःस्थापन तथा सामाजिक जागरूकता की अत्यंत आवश्यकता है। इस लेख के अन्तर्गत वृद्ध महिलाओं के जीवन में पीढ़ीगत संबंध और समायोजन की प्रक्रिया का गहन अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य–शब्दः वृद्धावस्था; महिलाएं; पीढ़ीगत संबंध; समायोजन

परिचय

वृद्धावस्था में समायोजन का अर्थ वृद्ध के बाहरी आंतरिक साम्य स्थापित करने से है। वृद्धावस्था में परिवार, समाज तथा अपने वातावरण से समायोजन की समस्या कई कारणों से जटिल हो जाती है। अनेक अध ययनकर्त्ताओं ने वृद्धावस्था तथा समायोजन के संबंधों का अध्ययन अनेक चरों के संदर्भ में किया है। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें मानसिक तथा व्यवहारात्मक क्रियाएँ सन्निहित होती हैं तथा इस प्रक्रिया में व्यक्ति अपनी आंतरिक आवश्यकताओं, तनावों, कुंठाओं तथा अंतर्द्वन्द्वों का सामना करता है, अपनी आंतरिक मांगों तथा अपने बाह्य संसार, जिसमें वह रह रहा है के द्वारा लादी गयी मांगों के बीच समन्वय स्थापित करता है।

वर्तमान दौर में पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रियाओं नें बदलते समय के साथ विश्व पटल पर अनेक परिर्वतन परिलक्षित किये है। लोगों के जीवन जीने के तरीके में नऐ सामाजिक प्रतिमान, मूल्य व विचार ने जगह ले लिया हैं, परम्परागत आधार का महत्व कम होता जा रहा हैं। वर्तमान में वरिष्ठ नागरिकों एवं युवा पीढी के बीच संवादहीनता की खाई इतनी गहरी हो गई है कि वरिष्ठ नागरिको को अनावश्यक तनाव के दंश को सहना पड़ता हैं। आधुनिकीकरण व ग्लोबलाइजेशन के चलते प्रवासन

बढ़ रहा है और सामाजिक गतिशीलता के कारण उत्पन्न समाजिक मूल्यो, सामाजिक संरचना एवं अर्थ व्यवस्था में परिवर्तन के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन प्रारम्भ हो गया है तथा उसके स्थान पर एकल परिवार का वर्चस्व बढ़ रहा है। एकाकी परिवार के चलन के कारण वृद्ध महिलाओं को उपेक्षित जीवन व्यतीत करने हेतु विवश होना पड़ रहा हैं। परिवार की सत्ता अब वृद्धों के हाथों से युवा पीढ़ी ने अपने हाथों में ले लिया है और परिवार के सभी निर्णय भी अब युवा पीढ़ी करने लगी है वैश्वीकरण ने वृद्धों की प्रस्थिति को और भी खराब बना दिया है वैश्वीकरण ने लोक क्षेत्र तथा घरेलू क्षेत्र के अधिकांश रोजगारों का विकास करने के बजाय उन्हें समाप्त कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप निर्धनता, बेरोजगारी, परिवार के कार्यशील सदस्यों को वृद्धों के प्रति अपने कर्तव्यों से विमुख कर दिया है जिसके कारण वृद्धों को आर्थिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता हैं। इसके साथ ही वृद्धावस्था में जीवन में कई शारीरिक एवं मानसिक बदलाव आते हैं। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट, अकेलापन, अवसाद, चिंता, व्यवहार में कठोरता, चिड़चिड़ापन, पारिवारिक असमायोजन आदि समस्याएँ जीवन को कठिन बना देती हैं।

भारतीय समाज में महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है। सदियों से वे जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में पिछड़ी हुई नजर आती है। विशेषतः वे सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक रूप से कभी स्वतंत्र नहीं रही। भारत में सीमित सामाजिक अन्तःक्रिया के कारण महिलाएं अपने अधिकारों और शक्तियों के बारे में अधिकतर अनभिज्ञ हैं। वे हमेशा अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिये परिवार के पुरूष सदस्यों पर निर्भर रहती है। यहां तक कि दिन–प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिये भी। वृद्ध पुरूषों की तुलना में वृद्ध महिलाओं में अधिक गम्भीर समस्याऐं होती है। सामाजिक एवं पारम्परिक पारिवारिक संरचना के कारण वे कई नियंत्रण के साथ जीने को विवश है। इसलिये वे हर समय स्वयं को गौण और अलग–थलग पाती है। जैसा कि महिलाओं की जीवन प्रत्याशा पुरूषों की तुलना में अधिक होती है, जिससे वे पुरूषों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहती है। इसलिये बड़ी संख्या में वृद्ध महिलाओं को अपने दीर्घ जीवनकाल में विधवा का जीवन जीना पड़ता है। वृद्धावस्था में वृद्ध महिलाओं को न केवल उम्र भेदभाव बल्कि लिंग भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। भारत में सदियों से लैंगिक असमानता प्रचलित है। जो लगभग सभी भारतीय समुदायों में व्याप्त है। वृद्धावस्था में भी लिंग भेदभाव महिलाओं को विकास के लाभ से वंचित कर उन्हें मुख्यधारा से हाशिये पर ले आता है।

साहित्य का पुनरावलोकन

देसाई (1981) ने माना है कि "संयुक्त परिवार वृद्धों, बच्चों एवं विधवाओं को आश्रय तथा शारीरिक, मानसिक व आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। संयुक्त परिवार के विघटन फलस्वरूप वृद्ध महिलाओं पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, परन्तु आज की युवा पीढ़ी में परिवार की परिधि मात्र पति – पत्नी और बच्चों को सम्मिलित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जिससे वृद्धजन परिवार से अलग होते जा रहे है। ऐसी परिस्थिति में वृद्धों को सहारे की समस्या होना स्वभाविक है। फलस्वरूप उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।"

कोलमैन पी एण्ड मैक्कूलाक (1990), "सोसाइटल चेन्ज, वैल्यू एण्ड सोशल सर्पोट" ने अपने अध्ययन में पाया कि मूल्यों में परिर्वतन से वृद्धों को आधुनिक समाज से समायोजन में समस्या आती है क्योंकि एक समयाअंतराल के बाद मूल्यों एवं तौर तरीकों में बदलाव आ जाता हैं। वृद्ध लोग परम्परागत मूल्यों को आधुनिक मूल्यों से अधिक तरजीह देते है जबकी नई पीढ़ी आधुनिक मूल्यों को तरजीह देती है जिसके कारण समायोजन में समस्या आती हैं।

जोशी अरविन्द (2003) के लेख "भारत में परिवार का भविष्य" में बताया है कि वर्तमान के वैश्वीकरण में भारतीय परिवारों की संरचना एवं संगठन पर विविध प्रकियाओं एवं कारकों को गहन प्रभाव पड़ा हैं। जिसके कारण वर्तमान में संयुक्त और एकाकी परिवार में वृद्धों के अधिकार में कमी आयी है एवं परिवार में बच्चों के सम्बन्ध में लिए जाने वाले सभी निर्णय अब अधिकांशतः बच्चों के माता–पिता के द्वारा लिया जाने लगा हैं। परिवार के सदस्यों के बीच अपनेपन की भावना में भी कमी आई हैं।

जोशी अरविन्द (2006) "रूरल एज्डः लिविंग अरेन्जमेंन्ट्स, प्रॉबलम एण्ड केयर इन ए.के. जोशी, ओल्डर परसन इन इण्डिया" में अपने अध्ययन मे यह पाया कि वृद्धों ने यह स्वीकार किया है कि परिवार के सदस्य उनकी उपेक्षा करते हैं। परिवार के किसी भी मामलों में उनसे सलाह नही ली जाती हं जैसें– पोते की शिक्षा, नई सम्पत्ति की खरीद या नये व्यवसाय को शुरू करने आदि। अधिकांश वृद्ध यह महसूस करते है कि परिवार के सदस्य जानबूझकर उनसे बात करने से बचते हैं। वृद्धों में सामाजिक–मानसिक समस्याओं जैसें– अलगाव, भावनात्मक ह्रास, निर्भरता, अकेलापन उपेक्षा आदि से ग्रसित पाये गये है। वर्तमान में युवाओं के दृष्टीकोण व मूल्यों में परिवर्तन के कारण युवा वृद्धों के मान–सम्मान व आदर के प्रति कम सजग व निम्न आस्था रखने लगे है। परिवार में रहने वाले वृद्धों व अन्य संस्थाओं में रहने वृद्धों की समस्याओं व समायोजन में अंतर पाया जाता

हैं।

राजेश कुमार (2008) ने अपनी पुस्तक ''भारत में वद्धावस्था और सामाजिक परिवर्तन'' में वद्धजनों की बढ़ती संख्या एवं उनकी समस्याओं का विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि आधुनिकीकरण एवं शहरीकरण के कारण परिवारिक संरचना में परिवर्तन हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप वृद्धजनों की देखभाल में कमी आ रही है।

सुनीता वर्मा (2011) ने अपनी पुस्तक ''वद्धजन एवं परिवार'' में वद्धजनों की परिवारिक भूमिका, सम्मान एवं समर्थन पर प्रकाश डाला है। उन्होंने उल्लेख किया है कि परिवार में वृद्धजनों की भूमिका धीरे–धीरे कम हो रही है, जिससे उनका सामाजिक सम्मान प्रभावित हो रहा है।

अरूण कुमार (2014) ने अपने शोध–पत्र ''वृद्धजन की सामाजिक स्थिति का अध्ययन'' (इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क) में वृद्धजनों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि वृद्धजनों को सामाजिक अलगाव एवं अकेलापन का सामना करना पड़ता है।

संजीव गुप्ता (2018) ने अपने शोध–पत्र ''वृद्धजन की देखभाल में परिवार की भूमिका'' (इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइन्स) में परिवार की भूमिका पर प्रकाश डालता है। उन्होंने यह बताया कि परिवार वृद्धजनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण समर्थन प्रणाली है।

तथ्य संकलन की पद्धति

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र वाराणसी शहर निर्धारित है। वाराणसी शहर के सभी 92 वार्डों के सर्वेक्षण कर नियमित अंतराल अंकण विधि के आधार पर 10 वार्डों का चयन किया गया है। इन वार्डों के वरिष्ठ महिलाओं की समग्र सूची बना कर प्रत्येक वार्डों से दैव निदर्शन पद्धति तथा सुविधाजनक निदर्शन पद्धति के नियमित अंतराल अंकण विधि द्वारा 30–30 अर्थात् कुल 300 वरिष्ठ महिलाओं का चयन कर अध्ययन को पूर्ण किया गया है। उत्तरदात्रियों का चयन करते समय निदर्शन को संतुलित एवं प्रतिनिधित्वपूर्ण रखा गया। तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वैतीयक दोनों ही स्त्रोतों से किया गया है। द्वैतीयक स्त्रोतों में मुख्य रूप से पुस्तकों, प्रतिवेदनों एवं जनगणना संबंधी प्रतिवेदनों से भी सूचनाओं का संकलन किया गया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन मुख्य रूप से साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार प्रक्रिया द्वारा की गई है। इस लेख के अन्तर्गत वृद्ध महिलाओं के जीवन में पीढ़ीगत संबंध और समायोजन की प्रक्रिया का गहन अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

तालिका– 1

क्र0 सं0	उम्र समूह	संख्या	प्रतिशत
1	60 वर्ष से 65 वर्ष	140	46.66
2	66 वर्ष से 71 वर्ष	75	25.00
3	72 वर्ष से 77 वर्ष	40	13.34
4	78 वर्ष से 83 वर्ष	30	10.00
5	83 वर्ष से अधिक	15	05.00
6	कुल	300	100.00

तालिका 1 से उत्तरदात्रियों के उम्र समूह के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है। तालिका अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदात्रियों में से 46.66 प्रतिशत उत्तरदात्री 60 वर्ष से 65 वर्ष के हैं, 25 प्रतिशत उत्तरदात्री 66 वर्ष से 71 वर्ष के हैं, 13.34 प्रतिशत उत्तरदात्री 72 वर्ष से 77 वर्ष के हैं, 10 प्रतिशत उत्तरदात्री 78 वर्ष से 83 वर्ष के हैं, तथा 05 प्रतिशत उत्तरदात्री 83 वर्ष से अधिक उम्र के हैं।

तालिका– 2

क्र सं0	वैवाहिक प्रस्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	थ्ववाहित	270	90
2	विधवा	30	10
3	कुल	300	100

तालिका 2 उत्तरदात्रियों की वैवाहिक स्थिति को स्पष्ट करता है। वैवाहिक स्थिति के आधार पर उत्तरदात्रियों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। तालिका अवलोकन से स्पश्ट हो जाता है कि कुल उत्तरदात्रियों में से 90 प्रतिशत उत्तरदात्री विवाहित हैं शेश 10 प्रतिशत उत्तरदात्री विधवा हैं।

तालिका– 3

आपके परिवार का स्वरूप क्या हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त परिवार	47	15.66
2	एकांकी परिवार	253	84.34
3	कुल	300	100.00

तालिका 3 से उत्तरदात्रियों के परिवार के स्वरूप के संदर्भ में जानकारी दी गई है। तालिका अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदात्रियों में से 84.34 प्रतिशत उत्तरदात्री एकल परिवार से संबंधित हैं, जबकि 15. 66 प्रतिशत उत्तरदात्री संयुक्त परिवार से संबंध रखते हैं। भारतीय नगरीय समाज में एकल परिवार की प्रधानता है। संयुक्त परिवारों की संख्या बहुत कम है। वर्तमान समय में व्यक्ति एकल परिवार को ही पसंद करते हैं।

तालिका– 4

क्या आपके दृष्टिकोण से पारिवारिक व सामाजिक जीवन में वृद्ध व्यक्ति नयी पीढ़ी की उपेक्षा का शिकार हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	170	56.67
2	नहीं	83	27.67
3	पता नहीं	47	15.66
4	कुल	300	100.00

तालिका 4 से स्पष्ट होता है 56.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनकी दृष्टिकोण से पारिवारिक व सामाजिक जीवन में वृद्ध व्यक्ति नयी पीढ़ी की अपेक्षा का शिकार है क्योंकि नयी पीढ़ी वृद्ध की हमेशा अन्देखी करता है, 27.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनकी दृष्टिकोण से पारिवारिक व सामाजिक जीवन में वृद्ध व्यक्तियों का नयी पीढ़ी के द्वारा उपेक्षा नहीं की जाती है, जबकि 15.66 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उन्हें इस संबंध में कुछ पता नहीं है।

तालिका– 5

आपके दृष्टिकोण से आपके परिवार की नई पीढ़ी के साथ अन्तः क्रिया की स्थिति कैसी हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य	184	61.33
2	सीमित	70	23.33
3	अत्यधिक कम	46	15.34
4	कुल	300	100.00

तलिका 5 से स्पष्ट होता है 61.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनकी दृष्टिकोण से उनकी परिवार की नई पीढ़ी के साथ अन्तःक्रिया की स्थिति सामान्य है, 61.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनकी दृष्टिकोण से उनकी परिवार की नई पीढ़ी के साथ अन्तःक्रिया की स्थिति सीमित है, जबकि 15.34 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनकी दृष्टिकोण से उनकी परिवार की नई पीढ़ी के साथ अन्तःक्रिया की स्थिति अत्यधिक कम है।

तालिका– 6

क्या आप स्वयं मनोवैज्ञानिक समायोजन में कठिनाई (मानसिक रूप से अकेला) अनुभव करते हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	201	67.00
2	न्हीं	99	33.00
3	वुल	300	100.00

तालिका 6 से स्पष्ट होता है कि 67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे मनोवैज्ञानिक समायोजन में कठिनाई (मानसिक रूप से अकेला) अनुभव करते हैं, जबकि 33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे मनोवैज्ञानिक समायोजन में कठिनाई (मानसिक रूप से अकेला) अनुभव नहीं करते हैं।

तालिका– 7

अस्वस्थ्य होने पर आपका अपने परिवार के साथ समायोजन कैसा होता हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	अच्छा	108	36.00
2	सामान्य	114	38.00
3	उचित नहीं	78	26.00
4	कुल	300	100.00

तालिका 7 से स्पष्ट होता है कि 36 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार अस्वस्थ्य होने पर उनका अपने परिवार के साथ समायोजन अच्छा रहता है, 38 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार अस्वस्थ्य होने पर उनका अपने परिवार के साथ समायोजन सामान्य रहता है, जबकि 36 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार अस्वस्थ्य होने पर उनका अपने परिवार के साथ समायोजन उचित नहीं रहता है।

तालिका– 8

क्या आप के प्रति परिवार के लोगों का सहयोगात्मक रवैया है?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	187	62.33
2	न्हीं	113	37.67
3	कुल	300	100.00

तालिका 8 से स्पष्ट होता है कि 62.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनके प्रति परिवार के लोगों का सहयोगात्मक रवैया है, जबकि 37.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनके प्रति परिवार के लोगों का सहयोगात्मक रवैया नहीं है। जरूरत पर वे उनके काम नहीं आते हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदात्रियों की आयु 60 से 65 वर्ष के बीच है, जिससे यह संकेत मिलता है कि अध्ययन में अपेक्षाकत युवा वृद्धों की संख्या अधिक है। वैवाहिक स्थिति के अनुसार अधिकांश उत्तरदात्री विवाहित हैं, जो परिवारिक संरचना में उनकी सक्रिय सहभागिता को दर्शाता है। परिवार के स्वरूप के संदर्भ में यह पाया गया कि एकल परिवारों की संख्या अत्यधिक है, जो आधुनिक समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन को दर्शाता है। यह प्रवृत्ति वृद्ध व्यक्तियों के सामाजिक एवं भावनात्मक जीवन को प्रभावित कर सकती है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदात्रियों के अनुसार नई पीढ़ी द्वारा वृद्धों की उपेक्षा की जाती है। साथ ही, नई पीढ़ी के साथ उनका अंतःक्रिया स्तर सामान्य से सीमित पाया गया, जो पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी को दर्शाता है। मानसिक स्थिति के संदर्भ में अधिकांश उत्तरदात्री मानसिक अकेलापन का अनुभव करते हैं, जो उनके मनोवैज्ञानिक समायोजन में कठिनाई को दर्शाता है। यद्यपि, परिवारिक सहयोग के मामले में मिश्रित परिणाम प्राप्त हुए कुछ को पर्याप्त सहयोग मिलता है, जबकि एक बड़ी संख्या को अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता है। स्वास्थ्य संबंधी परिस्थितियों में भी यह पाया गया कि सभी उत्तरदात्रियों का परिवारिक समायोजन समान नहीं है। कुछ का अनुभव अच्छा है, जबकि कई को सामान्य या असंतोषजनक स्थिति का सामना करना पड़ता है। समस्त रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक परिवारिक संरचना, विशेषतः एकल परिवार प्रणाली, वृद्धजनों के सामाजिक, मानसिक एवं भावनात्मक जीवन को प्रभावित कर रही है। अतः आवश्यक है कि परिवार एवं समाज दोनों स्तरों पर वृद्धों के प्रति संवेदनशीलता, सम्मान एवं सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया जाए, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. देसाई, एम. एन. 1981, भारतीय परिवार, नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशन।
2. Coleman, J. C. ,oa McCulloch, A. (1990): Social Change, Values and Social Support, London: Routledge
3. कुमार, राजेश (2008): ''भारत में वृद्धावस्था और सामाजिक परिवर्तन'', नई दिल्लीः राजेश पब्लिशर्स
4. वर्मा, सुनीता (2011): ''वृद्धजन एवं परिवार'', नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
5. सिंह, राकेश (2013): ''वृद्धजन की समस्याएँ एवं कल्याण'', नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।

6. कुमार, अरूण (2014): ''वृद्धजन की सामाजिक स्थिति का अध्ययन'', इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, भाग 75, अंक 1
7. गुप्ता, संजीव (2018): ''वृद्धजन की देखभाल में परिवार की भूमिका'', इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइन्स, भाग 6, अंक 2।
8. जोशी, अरविन्द (2003): ''भारत में परिवार का भविष्य'', नई दिल्ली।
9. जोशी, अरविन्द 2006, रूरल एज्डः लिविंग अरेन्जमेंन्ट्स, प्रॉबलम एण्ड केयर, ए.के. जोशी ;संपादनद्धए ओल्डर परसन इन इण्डिया, नई दिल्ली।
10. पचौरी, जे0पी0, जे0पी0 भट्ट एवं सुषमा नायाल 2009, वृद्धावस्था एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 11, अंक 1, जनवरी–जून, 1–5।
11. पटेल, कल्पना, (2024): ''वाराणसी शहर की वरिष्ठ महिला नागरिकों की सामाजिक– आर्थिक समस्याएँ एवं समायोजन पर आधारित एक अध्ध्यन'' पी0एच0डी0 थीसिस ऑफ सोश्योलॉजी डिपार्टमेंट, बी0एच0यू0, वाराणसी।

Cite this Article

'कल्पना पटेल', "वृद्ध महिलाओं के जीवन में पीढ़ीगत संबंध और समायोजन का अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:4, April 2026.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."